IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीमद् भगवद गीता शिक्षा दर्शन में निहित मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रियंका बियानी[1], डॉ. दुर्गालाल पारीक[2]

[1]शोधार्थी, [2]निर्देशक, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुन्झुनूं

सारांश :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने उद्देष्यों को ध्यान में रखते हुए निष्कर्षों का विवेचन किया है तथा इसकी शैक्षिक उपयोगिकता को बताया गया है। गीता में निहित मूल्यों को बताया गया है। इसमें शैक्षिक मूल्यों को उभारा गया है। वर्तमान संदर्भ में उसकी उपयोगिता को बताया गया है।

वर्तमान परिदृष्य में मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में इस तरह भागा जा रहा हैं कि मानवता, नैतिकता, धार्मिक, सामाजिक आदि गुण बहुत पीछे छूट गये हैं। वर्तमान समय में माता–पिता अपने बालकों को नैतिकता व मूल्यों का ज्ञान देने के बजाय अंग्रेजी षिक्षा देना अति आवष्यक समझते हैं। आज के समय में हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की छवि धुमिल होती जा रही हैं। श्रीमद्भगवत गीता को मात्र धार्मिक ग्रन्थ की श्रेणी में रखा जाता हैं। परन्तु इसमें जीवन का सार भरा पड़ा हैं। इसके अन्तर्गत दुरूह, सरल, क्लिष्ट शब्दों का साधारण रूप से समझ न आ सकने वाले वेदान्त उपनिषद् के निरस नियमों का सुन्दर, सरल भाषा में निरूपित किया गया हैं। ईष्वरीय तत्त्व ने धर्ममूलक समाज की स्थापना कर प्राचीन मूल्यों व आदर्षों को बचाये रखा हैं तथा अपने जीवन सिद्धान्तों को अपने जीवन में ही चरितार्थ करके दिखाया। आध्यात्मिक विकास कर्म कर्त्तव्य–परम्परा द्वारा मानवता (मूल्य) का संरक्षण इत्यादि पक्षों का ज्ञान 'श्रीमद्भगवत' गीता के अगाह अध्ययन द्वारा ही उपस्थित हो सकता हैं।

अतः इन सब बातों से प्रभावित होकर ही श्रीमद्भगवत गीता ने निहित मूल्यों का अध्ययन करना शोधार्थी द्वारा निष्चित किया गया हैं।

प्रस्तावना :

अठारह पुराणों में श्रीमद् भगवद गीता महापुराण को श्रीमद् शब्द से अलंकृत किया गया है। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित इस अद्वितीय ग्रंथ को श्रीकृष्ण का वाड़मय स्वरूप कहा जाता है। भारतीय जनमानस में यह अत्यधिक श्रद्धा का पात्र है। श्रीमद् भगवद गीता कोई सामान्य ग्रन्थ नहीं है, अपितु जीवन–दर्शन है। अगर किसी भी देश का भविष्य देखना है तो वहाँ के बच्चों को देखो क्योंकि शिक्षित बालक कल का सुयोग्य नागरित बनता है। इसके लिए सर्वप्रथम यह प्रयास किया जाना चाहिए कि ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके।

इसमें विभिन्न विषयों को मूल्यपरक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता हैं, जिनसे उनका संतुलित एवं सर्वतोन्मुखी विकास हो सके। हमारी युवा पीढ़ी का विकास तभी पूर्णतया सम्भव हैं, जब तक हम उसका सही मार्गदर्षन करते हैं और उन्हें जीवन के उन व्यावहारिक पक्षों से अनुभूत कराया जाता रहे जो समाज सम्मत हैं। इसी से वह अपनी संस्कृति से भी परिचित हो जायेगा और उसे सुरक्षित भी रख पायेगा। नैतिक आचरण वह अपने आप को जीवन के व्यावहारिक पक्ष से जोड़ने पर ही कर पायेगा। नैतिकता बालक के सर्वांगीण विकास का आधार होती हैं। षिक्षा के माध्यम से बालक को इन पक्षों से अवगत कराया जा सकता हैं। समय के साथ–साथ षिक्षा का स्वरूप व उद्देष्य भी बदलता रहता हैं। आज की परिस्थितियों में अनुकूल षिक्षा की व्यवस्था द्वारा षिक्षा में नैतिक पक्ष जोड़कर व्यक्ति में मानवीय गुण विकसित किए जा सकते हैं, ताकि वह अपने जीवन का सदुपयोग मानव कल्याण में कर सकें।

षिक्षा में मूल्यों की भूमिकाः

मूल्य मनुष्य के व्यवहार को नियन्त्रित व निर्देषित करते हैं। षिक्षा तभी सार्थक होगी जब वह समाज के लिए उपयोगी बनें। षिक्षा को व्यावहारिक व मूल्यपरक बनाया जाये।

समस्या का औचित्यः

श्रीमद्भगवत् गीता को मात्र धार्मिक ग्रन्थ की श्रेणी में रखा जाता हैं। परन्तु इसमें जीवन का सार भरा पड़ा हैं। इसके अन्तर्गत दुरूह, सरल, विलष्ट षब्दों का भ्रम साधारण रूप से समझ आ सकने वाले वेदान्त उपनिषद् के नीरस नियमों का सुन्दर, सरल भाषा में निरूपित किया गया हैं। ईष्वरीय तत्त्व ने धर्म मूलक समाज की स्थापना कर प्राचीन मूल्यों व आदर्षों को बचाये रखा हैं तथा अपने जीवन सिद्धान्तों को अपने जीवन में ही चरितार्थ करके दिखाया। आध्यात्मिक विकास कर्म, कर्त्तव्य–परम्परा द्वारा मानवता ;मूल्यद्ध का संरक्षण इत्यादि पक्षों का ज्ञान श्रीमद्भगवत् गीता के अगाह अध्ययन द्वारा ही उपस्थिति हो सकता हैं। अतः इन सब बातों से प्रभावित होकर ही श्रीमद्भगवत् गीता में निहित मूल्यों का अध्ययन करना षोधार्थी द्वारा निष्चित किया गया हैं।

षोध के उद्देष्य :

1. श्रीमद्भगवत गीता षिक्षा दर्षन के अनुसार षैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. श्रीमद्भगवत गीता षिक्षा दर्षन में सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

षोध विधिः

शोधार्थी द्वारा दार्शनिक शोध विधि को अपनाया गया है क्योंकि दार्षनिक षोध विधि में नवीन सत्यों का प्रतिस्थापना किया जाता हैं। षिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष का विकास केवल दार्षनिक षोध कार्यों द्वारा ही किया जा सकता हैं। आज की षिक्षा पद्धति में सैद्धान्तिक व व्यावहारिक दोनों ही पक्ष पाष्चात्य देषों की देन हैं। अर्थात् आज की षिक्षा का स्वरूप अपना नहीं, वरन् पाष्चात्य से उधार लिया गया हैं। इसलिए यह अत्यन्त आवष्यक हैं कि षिक्षा में दार्षनिक षोध कार्यो द्वारा अपनी परिस्थितियों में षिक्षा का सैद्धान्तिक पक्ष विकसित किया जाए, तभी षिक्षा का व्यावहारिक पक्ष अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति कर सकेगा। इस प्रकार षिक्षा के दोनों पक्षों के विकास के लिए दार्षनिक विधि आवष्यक एवं सर्वमान्य हैं।

स्त्रोत :

1. प्राथमिक स्त्रोत :

विषय से सम्बन्धित सीधी जानकारी प्रदान करते हैं। सम्बन्धित दर्षन षास्त्री के स्वर के लेख, आत्मकथाएँ, भाषा, प्रलेख, गीत, कविता, ग्रन्थ, निबन्ध–चित्र, पत्र–पत्रिकाएँ में दिये साक्षात्कार एवं पुस्तकालयों का अध्ययन।

2. द्वितीयक स्त्रोत :

अन्य लेखकों के लेखों षोधों, समीक्षक ग्रन्थों, षोध पत्रिकाओं से प्राप्त सूचनाओं निहित हैं। दार्षनिक षोध प्रविधि के मुख्य उपागम में दर्षन आधारित प्रदत्त, विष्लेषण विवेचन के प्रकार से किया जाता हैं।

प्रदत्तों की प्रकृत्ति :

प्रस्तुत लघु षोध की प्रकृति गुणात्मक हैं।

गीता षिक्षा दर्षन की षैक्षिक पृष्ठभूमि :

गीता षिक्षा दर्षन सार्वकालिक हैं। इसक सम्बन्ध काल विषेष से नहीं है। सामाजिक परिवर्तन सदैव होते रहते हैं और उसे परिवर्तन के अनुरूप सामाजिक प्रक्रिया को नियंत्रित करने के लिए षिक्षक को सदा अवतार की भूमिका निभानी पड़ती हैं। सामाजिक परिवर्तन के परिणाम स्वरूप उत्पन्न कुण्ठा को दूर करने के लिए षिक्षक को प्रयास करना पड़ता हैं। गीता में कृष्ण ने तात्कालिन धार्मिक एवं सामाजिक विकृतियाँ को दूर करके मानव को निष्काम कर्मयोग का पाठ पढ़ाने हेतु अवतार लेकर षिक्षक की भूमिका निभाई थी।

षोध अध्ययन की परिसीमाएँ :

1. श्रीमद्भगवत् गीता दर्षन षिक्षा दर्षन में से विद्यार्थी हेतु उपयोगी मूल्यों को उभारने का ही प्रयास किया गया है।
2. श्रीमद्भगवत् गीता में निहित मूल्यों से प्राप्त षिक्षा का ही समीक्षात्मक अध्ययन किया जायेगा।

सुझाव :

1. प्रस्तुत शोध सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों तक ही सीमित हैं। इसके परिसीमन क्षेत्र को बढ़ाया जा सकता हैं।
2. श्रीमदभगवद् गीता की वर्तमान समय में शैक्षिक उपादेयता व महत्त्व का अध्ययन भी किया जा सकता हैं।

निष्कर्ष :

लघु शोध प्रबन्ध के गीता षिक्षा दर्षन में निहित मूल्यों की प्रस्तावना, मूल्य की अवधारणा, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य, वर्तमान परिदृष्य एवं गीता में निहित मूल्यों का अध्ययन श्लोकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। गीता दर्शन का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का उल्लेख पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- लोढ़ा, महावीर मल (1996), नैतिक षिक्षा विविध आयाम।
- पाण्डेय, एस. आर. (2003), होम एनवायरमेंट एण्ड वेल्यु डेवलपमेंट।
- एन. वेंकटया एण्ड एन. संध्या (2004), रिसर्च इन वेल्यु एज्युकेषन।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005), नई दिल्ली, एनसीइआरटी।
- वेंकटया, एन. (2005), वेल्यु इन एज्युकेषन।
- कोठारी एल व अरोड़ा (2006), विजन एन्ड वेल्युज, दिल्ली, पेरागोन इन्टरनेषनल पब्लिशर्स।
- माइटल्स, हेनरी (2007), वेल्यु इन एज्युकेषन।
- शर्मा एण्ड माहेष्वरी (2007), सामाजिक विज्ञान षिक्षण।
- पंड्या, शकुन्तला (2008), विद्यालयों में नैतिक षिक्षा की प्रेरक विद्यायें।
- वर्मा, जी. एस. (2008), मूल्य षिक्षा, पर्यावरण एवं मानवाधिकार।
- पाण्डेय एण्ड मिश्र (2008), मूल्य षिक्षण।
- के. पी. अब्दुल सलीम, (2010) मूल्य षिक्षा अन्वेषिका, (वोल्युम–7, नं. 1 जून 2010)।
- सलीम, के. पी अब्दुल (2010), मूल्य षिक्षा अन्वेषिका।
- धनकड, निरजा (2011), मूल्य षिक्षा ''एज्युकेषन इन इमरजिंग इण्डियन सोसायटी''
- काबरा, रूपनारायण (2013), षिक्षा में नैतिक एवं आचरण मूल्य।
- बैस, एच.एस. (1991), षिक्षा की रूपरेखा, आषीष पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली।
- गुप्ता, रामबाबू (1995); भारतीय षिक्षा और उसकी समस्याएँ, रतन प्रकाषन, आगरा।
- गुप्ता, नत्थूलाल (2000); वैल्यु एजुकेषन थ्योरी एण्ड प्रेक्टिसेज, जयकृष्ण अग्रवाल, महात्मा गाँधी रोड़, अजमेर।